जीवन ऊर्जा है

मूलाधार से सहस्रार की यात्रा का आनंद : जब ऊर्जा तीसरे नेत्र तक आती है तो असली आंख खुलती है

सुख जब सदा होता है, तो शांति में रूपांतरित हो जाता है। आनंद जब परिपूर्ण होता है, तो शून्यवत हो जाता है। पूरा घड़ा जैसे भर जाए और आवाज नहीं करता, ऐसे ही पूरा सुख जब हो जाता है, तो कोई आवाज नहीं करता।

'अमृत झरै सदा सुख उपजै, बंकनालि रस पीजै।'

और पीते जाओ उसके रस को, जितना हो। रस कभी चुकता नहीं। पीनेवाला थक जाए, पिलानेवाला नहीं थकता।

'मूल बांधि सर गगन सामना, सुखमनि यों तन लागी'।

यह जो महासुख की घटना घटती है, योगी कैसे उसे घटाता है? वह अपने भीतर क्या करता है? वह किस भांति अपने को आकाश में डुबा देता है? 'मूल बांधि सर गगन समाना'—यह उसकी प्रक्रिया है। जीवन ऊर्जा है। शक्ति है। लेकिन साधारणतः तुम्हारी जीवन ऊर्जा नीचे की तरफ प्रवाहित हो रही है। इसलिए तुम्हारी सब जीवन ऊर्जा अनंत काम-वासना बन जाती है। काम-वासना तुम्हारा निम्नतम चक्र है। तुम्हारी ऊर्जा नीचे गिर रही है। और सारी ऊर्जा धीरे-धीरे कामकेन्द्र पर इकट्ठी हो जाती है। इसलिए तुम्हारी सारी शक्ति काम-वासना बन जाती है। जितने तुम शक्तिशाली हो जाओगे, उतनी प्रगाढ़ काम-वासना तुममें पैदा होगी। इसलिए तो साधु डर जाते हैं। तो भोजन कम

करते हैं। क्योंकि न भोजन लेंगे, न शक्ति पैदा होगी। न शक्ति पैदा होगी, न काम-वासना तुममें पैदा होगी, न काम-वासना उठेगी। साधु अपने को सुखाने में लग जाते हैं। साधु धीरे-धीरे ऐसी कोशिश करते हैं, कि इतना ही भोजन लें, जितने से रोज दैनिक शरीर का काम चल जाए। ऊर्जा बचे न मगर यह कोई साधुता हुई? यह तो नंपुसकता हुई। यह कोई साधना हुई? शक्ति न बचे, तो तुम्हारे ब्रह्मचर्य का क्या अर्थ है? क्या मूल्य? कोई सार्थकता नहीं। निर्बल के ब्रह्मचर्य का क्या अर्थ है? लाखों लोग निर्बलता को ब्रह्मचर्य समझ लेते हैं। रुग्णता को स्वास्थ्य समझ लेते हैं। शरीर को गला लेते हैं। ऊर्जा पैदा नहीं होती, इसलिए कामकेन्द्र सूख जाता है। तो वे सोचते हैं कि हम सिद्धावस्था को उपलब्ध हो गए। उन्हें ठीक से भोजन दो, एक सप्ताह के भीतर उनकी काम-ऊर्जा भीतर प्रवाहित होने लगेगी। फिर वासना जगने लगेगी। यह कोई छुटकारा न हुआ। यह आत्मा-प्रवंचना है। कबीर जैसे ज्ञानी, ऐसी साधुता को दो कौड़ी का भी नहीं मानते।

साधुता का अर्थ ऊर्जा को समाप्त करना नहीं है, ऊर्जा को रूपांतरित करना है। ऊर्जा को नष्ट करना, सुखाना नहीं है, ऊर्जा की दिशा बदलनी है। वह जो नीचे की तरफ बहती है, वह ऊपर की तरफ बहने लगे। अधोगामी शक्ति ऊर्ध्वगमन की तरफ निकल जाए। जो अभी जमीन की तरफ बहती है, वह आकाश की तरफ उठने लगे। जो अभी पानी की तरह है, वह अग्नि की तरह हो जाए। पानी नीचे की तरफ बहता है। अग्नि सदा ऊपर जाती है। जिस दिन तुम्हारी ऊर्जा आग्नेय हो जाएगी, उसी दिन एक अनूठे ब्रह्मचर्य का जन्म होगा, जो निर्बलता से नहीं, वरन परम-वीर्य से पैदा होती है।

'मूल बांधि'—वह जो मूलाधार चक्र है, जहां से ऊर्जा कामऊर्जा बनती है, उसे बांध लेना है। उसे सिकोड़ लेना है। इसलिए योग ने, पतंजलि ने, हठयोग ने बहुत सी प्रक्रियाएं खोजी हैं मूल को बांधने की। मूल जब बंध जाए तो ऊर्जा अपने आप ऊपर उठने लगती है। क्योंकि नीचे द्वार बंद

बांधने की। मूल जब बंध जाए तो ऊर्जा अपने आप ऊपर उठने लगती है। क्योंकि नीचे द्वार बंद हो जाता है। द्वार अवरुद्ध हो जाता है। एक छोटा सा प्रयोग जब भी तुम्हारे मन में काम-वासना उठे तो करो, तो धीरे-धीरे तुम्हें राह साफ हो जाएगी। जब भी तुम्हें लगे, कि काम-वासना तुम्हें पकड़ रही है, तब डरो मत। शांत होकर बैठ जाओ। जोर से श्वास बाहर फेंको—उच्छवास। भीतर मत लो श्वास को। क्योंकि जैसे भी तुम भीतर गहरी श्वास को लोगे, भीतर जाती श्वास काम-ऊर्जा को नीचे की तरफ धकाती है। जब तुम्हें काम-वासना पकड़े तब एक्सहेल करो। बाहर फेंको श्वास को। नाभि को भीतर खींचो, पेट को भीतर लो और श्वास को बाहर फेंको जितनी फेंक सको।

धीरे-धीरे अभ्यास होने पर तुम संपूर्ण रूप से श्वास को बाहर फेंकने में सफल हो जाओगे। जब सारी श्वास बाहर फिंक जाती है, तो तुम्हारा पेट और नाभि वैक्यूम हो जाते हैं। शून्य हो जाते हैं। और जहां कहीं शून्य हो जाता है, वहां आसपास की ऊर्जा शून्य की तरफ प्रवाहित होने लगती है। शून्य खींचता है। क्योंकि प्रकृति शून्य को बर्दाश्त नही करती। शून्य को भरती है। तुम नदी से पानी भर लेते हो घड़े में। तुमने घड़ा भर कर उठाया नहीं कि गड्ढा हो जाता है पानी में घड़े से। तुमने पानी भर लिया, उतना गड्ढा हो गया। चारों तरफ से पानी दौड़ कर उस गड्ढे को भर देता है। तुम्हारी नाभि के पास शून्य हो जाए, तो मूलाधार से ऊर्जा तत्क्षण नाभि की तरफ उठ जाती है। और तुम्हें बड़ा रस मिलेगा। जब तुम पहली दफा अनुभव करोगे, कि एक गहन ऊर्जा बाण की तरह

अनुभव करोगे, कि एक गहन ऊर्जा बाण की तरह आकर नाभि में उठ गई। तुम पाओगे, सारा तन एक स्वास्थ्य से भर गया। एक ताजगी! यह ताजगी वैसी ही होगी, ठीक वैसा ही अनुभव तुम्हें होगा ताजगी का, जैसा संभोग के बाद उदासी का होता है। जैसा ऊर्जा के स्खलन के बाद एक शिथिलता पकड़ लेती है—एक रुग्णदशा, एक विषाद, एक हारापन, एक थकान। तुम सो जाना चाहते हो।

बहुत से लोग संभोग का उपयोग केवल नींद के लिए ही करते हैं। क्योंकि थक जाते हैं। पश्चिम में डाक्टर तो लोगों को सलाह देते हैं, जिन को नींद नहीं आती, कि संभोग उनके लिए उचित है। नींद अपने आप आ जाएगी। लेकिन वह नींद कोई स्वस्थ नींद नहीं है। वह थकान की नींद है, वह विश्राम नहीं है, थकान है। थकान और विश्राम में बड़ा फर्क है। विश्राम में ऊर्जा पूरी आराम करती है। थकान में ऊर्जा नहीं होती। हारे, थके, टूटे हुए तुम पड़ जाते हो।

संभोग के बाद जैसे विषाद का अनुभव होगा, वैसे ही अगर ऊर्जा नाभि की तरफ उठ जाए, तो तुम्हें हर्ष का अनुभव होगा। एक प्रफुल्लता घेर लेगी। ऊर्जा का रूपांतरण शुरू हुआ। तुम ज्यादा शक्तिशाली, ज्यादा सौमनस्यपूर्ण, ज्यादा उत्फुल्ल, सक्रिय, अनथके, विश्रामपूर्ण मालूम पड़ोगे। जैसे गहरी नींद के बाद उठे हो। ताजगी आ गई।

इसलिए जो लोग भी मूलाधार से शक्ति को सक्रिय कर लेते हैं, उनकी नींद कम हो जाती है। जरूरत नहीं रह जाती। वे थोड़े घंटे सो कर भी उठते ही ताजे हो जाते हैं, फिर तो दो घंटे सो कर

ऊर्जा जब बढ़ेगी, हृदय से कंठ में आएगी तब तुम्हारी वाणी में माधुर्य आ जाएगा। तब तुम्हारी वाणी में एक संगीत, एक सौंदर्य आ जाएगा। तुम साधारण से शब्द बोलोगे और उन शब्दों में काव्य होगा। तुम दो शब्द किसी से कह दोगे और तुम उसे तृप्त कर दोगे

उतने ही ताजे हो जाते हो जितने ताजे तुम आठ घंटे सो कर भी नहीं हो पाते। क्योंकि तुम्हारे शरीर को तो ऊर्जा को पैदा करना पड़ता है, निर्मित करना पड़ता है, भरना पड़ता है। और बड़ा पागलपन है। रोज शरीर भरता है, रोज तुम उसे उलीचते हो। यूं ही उम्र तमाम होती है। रोज भोजन लो, शरीर को ऊर्जा से भरो, फिर उसे उलीचो और फेंक दो।

ऊर्जा का ऊर्ध्वगमन बड़ा अनूठा अनुभव है और पहला अनुभव होता है, मूलाधार से नाभि की तरफ जब संक्रमण होता है।

यह मूलबंध की सहजतम प्रक्रिया है कि तुम श्वास को बाहर फेंक दो, नाभि शून्य हो जाएगी, ऊर्जा उठेगी नाभि की तरफ, मूलबंध का द्वार अपने आप बंद हो जाएगा! वह द्वार खुलता है ऊर्जा के धक्के से। जब ऊर्जा मूलाधार में नहीं रह जाती, धक्का नहीं पड़ता, द्वार बंद हो जाता है।

'मूल बांधि सर गगन समाना...'

बस, तुमने अगर एक बात सीख ली कि ऊर्जा कैसे नाभि तक आ जाए, शेष तुम्हें चिंता नहीं करनी है। तुम ऊर्जा को, जब भी कामवासना उठे, नाभि में इक्ट्ठा करते जाओ। जैसे-जैसे ऊर्जा बढ़ेगी नाभि में, अपने आप ऊपर की तरफ उठने लगेगी। जैसे बर्तन में पानी बढ़ता जाए, तो पानी की सतह ऊपर उठती जाए।

असली बात मूलाधार का बंद हो जाना है। घड़े के नीचे का छेद बंद हो गया, अब ऊर्जा इकट्ठा होती जाएगी। घड़ा अपने आप भरता जाएगा।

एक दिन तुम अचानक पाओगे, कि धीरे-धीरे नाभि के ऊपर ऊर्जा आ रही है। तुम्हारा हृदय एक नई संवेदना से आप्लावित हुआ जा रहा है। तुम कहते हो कि तुम प्रेम करते हो। लेकिन तुम कर नहीं सकते क्योंकि तुम्हारे हृदय में ऊर्जा नहीं है। तुम लाख कहो, कि तुम प्रेम करते हो। तुम प्रेम कर नहीं सकते। क्योंकि प्रेम तभी घटता है, जब हृदय-चक्र में ऊर्जा आती है। उसके पहले घटता नहीं। तो तुम समझाते रहे अपने को कि तुम प्रेम करते हो; लेकिन तुमने किसी को प्रेम नहीं किया। न अपनी पत्नी को, न अपने बेटे को । ज्यादा से ज्यादा तुम अपने को प्रेम करते हो। बाकी तुम किसी को प्रेम नहीं करते। और वह भी बहुत कमजोर है। वह भी कोई बड़ा गहरा नहीं है।

जिस दिन हृदय चक्र पर आयेगी तुम्हारी ऊर्जा, तुम पाओगे भर गए तुम प्रेम से। तुम जहां भी उठोगे, बैठोगे, तुम्हारे चारों तरफ एक हवा बहने लगेगी प्रेम की। दूसरे लोग भी अनुभव करेंगे कि तुममें कुछ बदल गया है। तु
हो। तुम कोई और ही तरंग ले
तुम्हारे साथ कुछ और ही लह
उदास प्रसन्न हो जाता है, कि दु
दुख को भूल जाता है, कि अशां
है, कि तुम जहां छू देते हो, जिस
पर ही एक छोटी सी वर्षा प्रेम
लेकिन हृदय में ऊर्जा आएगी, त

ऊर्जा जब बढ़ेगी, हृदय से क
तुम्हारी वाणी में माधुर्य आ जाए
वाणी में एक संगीत, एक सौंदर्य आ जाएगा। तुम साधारण से शब्द बोलोगे और उन शब्दों में काव्य होगा। तुम दो शब्द किसी से कह दोगे और तुम उसे तृप्त कर दोगे। तुम चुप भी रहोगे तो तुम्हारे मौन में भी संदेश छिप जाएंगे। तुम न भी बोलोगे, तो भी तुम्हारा अस्तित्व बोलेगा। ऊर्जा कंठ पर आ गई।

उपनिषद् के गीत तभी तो फूटे होंगे, जब ऊर्जा कंठ पर आ गई होगी। बुद्ध के वचन तभी तो निस्सृत हुए होंगे, जब ऊर्जा कंठ पर आ गई होगी। कुरान के वचन साधारण वचन हैं। लेकिन जब मुहम्मद ने उन्हें कहा था तब उन वचनों में बात ही कुछ और थी। तब वे किसी और ही लोक से आते थे।

होगी। कुरान के वचन साधारण वचन हैं। लेकिन जब मुहम्मद ने उन्हें कहा था तब उन वचनों में बात ही कुछ और थी। तब वे किसी और ही लोक से आते थे।

तुम भी उनको दोहरा सकते हो। लेकिन तुम्हारी ऊर्जा जहां होगी, उन शब्दों में वही गुणधर्म प्रविष्ट हो जाएगा। अगर काम-वासना से भरा हुआ आदमी कुरान को कितने ही तरन्नुम से गाए, तो भी वह कव्वाली ही होगी। वह कुरान हो नहीं सकता। क्योंकि कुरान का संबंध शब्दों से थोड़े ही है! तुम्हारी जीवन ऊर्जा से है। और अगर मुहम्मद कव्वाली भी गाएं, तो वह कुरान हो जाएगा। उन शब्दों में भी नये भाव आविर्भूत हो जाएंगे। नई कोपलें लग जाएंगी। नये फूल लग

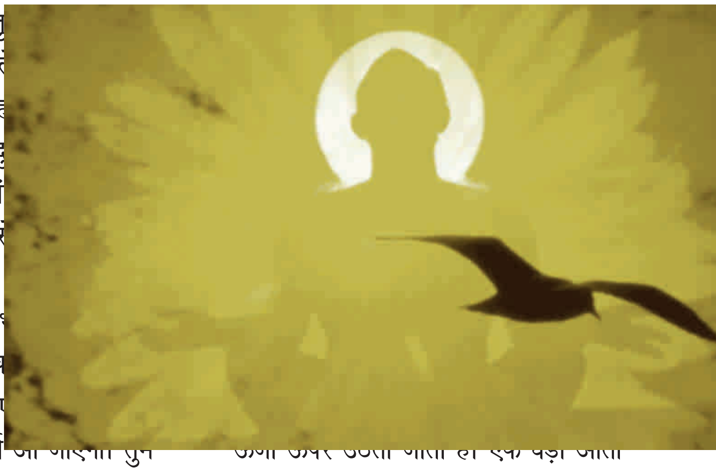

ऊर्जा ऊपर उठती जाती है एक घड़ी आती है, कि तुम्हारे तीसरे नेत्र पर ऊर्जा का आविर्भाव होता है। तब तुम्हें पहली दफा दिखाई पड़ना शुरू होता है। तुम अंधे नहीं होते। उसके पहले तुम अंधे हो। क्योंकि उसके पहले तुम्हें आकार दिखाई पड़ते हैं। निराकार दिखाई नहीं पड़ता। और वही असली में है। सब आकारों में छिपा है निराकार। आकार तो मूलाधार में बंधी हुई ऊर्जा के कारण दिखाई पड़ते हैं, अन्यथा कोई आकार नहीं है। तुम कहां समाप्त होते हो? कहां तुम्हारी सीमा है? कहां तुम शुरू होते हो? न कोई कहीं शुरू होता है, न कोई कहीं समाप्त होता है। सारा जगत संयुक्त है। तुम झाड़ों से जुड़े हो। पहाड़ों से जुड़े हो। चांद-तारों से जुड़े हो। छोटा सा मकड़ी का जाला हिलाओ, और अनंत आकाश के तारे भी कंप जाते हैं। क्योंकि सारा अस्तित्व एक है : इसमें दो तो हैं नहीं कहीं; लेकिन तुम्हें अनेक दिखाई पड़ता

होता है। तुम अंधे नहीं होते। उसके पहले तुम अंधे हो। क्योंकि उसके पहले तुम्हें आकार दिखाई पड़ते हैं। निराकार दिखाई नहीं पड़ता। और वही असली में है। सब आकारों में छिपा है निराकार। आकार तो मूलाधार में बंधी हुई ऊर्जा के कारण दिखाई पड़ते हैं, अन्यथा कोई आकार नहीं है। तुम कहां समाप्त होते हो? कहां तुम्हारी सीमा है? कहां तुम शुरू होते हो? न कोई कहीं शुरू होता है, न कोई कहीं समाप्त होता है। सारा जगत संयुक्त है। तुम झाड़ों से जुड़े हो। पहाड़ों से जुड़े हो। चांद-तारों से जुड़े हो। छोटा सा मकड़ी का जाला हिलाओ, और अनंत आकाश के तारे भी कंप जाते हैं। क्योंकि सारा अस्तित्व एक है : इसमें दो तो हैं नहीं कहीं; लेकिन तुम्हें अनेक दिखाई पड़ता है। अंधे हो। मूलाधार अंधा चक्र है। इसलिए तो हम काम-वासना को अंधी कहते हैं। वह अंधी है। उसके पास आंख बिलकुल नहीं है।

आंख तो खुलती है—तुम्हारी असली आंख, जब तीसरे नेत्र पर ऊर्जा आकर प्रगट होती है, जब लहरें तीसरे नेत्र को छूने लगती हैं। तीसरे नेत्र के किनारे पर जब तुम्हारी ऊर्जा की लहरें आकर टकराने लगती हैं, पहली दफा तुम्हारे भीतर दर्शन की क्षमता जगती है।

इसलिए हमने इस देश में विचार की प्रक्रिया को फिलासफी नहीं कहा। हमने विचार की प्रक्रिया को दर्शन कहा। फिलासफी पश्चिम में दर्शनशास्त्र का नाम है। हमने वह नाम पसंद न किया। क्योंकि फिलासफी तो पैदा हो जाती है, मूलाधार में ऊर्जा हो तब भी, लेकिन दर्शन पैदा नहीं होता। और

फिलासफी तो पैदा हो जाती है, मूलाधार में ऊर्जा हो तब भी, लेकिन दर्शन पैदा नहीं होता। और मूलाधार में भटके हुए अंधे कितना ही सोचें, उनके सोचने का क्या मूल्य हो सकता है? वे सोच कर भी क्या सोच पाएंगे।

अंधा कितना ही प्रकाश संबंध में विचार करे, सिर पटके, गणित बिठाए, विश्लेषण करे, मीमांसा में उतरे, क्या हल होगा? अंधा जो कहेगा प्रकाश के संबंध में, गलत होगा। अंधे को तो अंधेरा भी दिखाई नहीं पड़ता। प्रकाश तो बहुत दूर की बात है। तुम शायद सोचते होगे, कि अंधे को अंधेरा दिखाई पड़ता है तो तुम गलती में हो। अंधेरा देखने के लिए भी आंख चाहिए। अंधेरा भी आंख का ही अनुभव है। तुम आंख बंद करते हो, तुम्हें अंधेरा दिखाई पड़ता है क्योंकि आंख खोलकर तुमको प्रकाश का अनुभव है। अंधे को तो अंधेरा भी दिखाई नहीं पड़ सकता। अंधेरा और प्रकाश तो आंख के अनुभव हैं।

तो अंधे सोच सकते हैं। और बड़े दर्शन-शास्त्र खड़े कर सकते हैं। ऐरिस्टोटल, कांट, हीगल, बर्ट्रेंड रसेल—पश्चिम के बड़े से बड़े विचारक भी दार्शनिक नहीं हैं।

दर्शन एक अनूठी प्रक्रिया है, जिसका संबंध विचार से नहीं, ऊर्जा से है। कपिल, कणाद, बुद्ध, महावीर, शंकर, नागार्जुन दार्शनिक हैं, विचारक नहीं हैं। क्योंकि दार्शनिक होने का अर्थ है, जिसकी ऊर्जा की लहरें तृतीय नेत्र के तट से टकराने लगीं। अब इसको दिखाई पड़ता है। यह कोई सिद्धांत नहीं बनाता। इसे जो दिखाई पड़ता है, उसे सिद्धांत

टकराने लगीं। अब इसको दिखाई पड़ता है। यह कोई सिद्धांत नहीं बनाता। इसे जो दिखाई पड़ता है, उसे सिद्धांत में बांधता है। यह टटोलता नहीं है अंधेरे में। इसे जो दिखाई पड़ता है, उसे शब्दों में उतारता है ताकि अंधों तक शब्द पहुंचाए जा सकें। और जब तुम्हारे जीवन में आंख आती है, तब सिवाय परमात्मा के कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता। सारा संसार माया हो जाता है। सिर्फ परमात्मा सच होता है। अभी माया सच है। परमात्मा एकमात्र असत्य है। तो तुम लाख कहो कि हम मानते हैं। लेकिन तुम जानते हो कि पामात्मा है नहीं। मानोगे तुम कैसे? जिसे जाना नहीं, उसे मानोगे कैसे? जिसे देखा नहीं, उसे तुम मानोगे कैसे? भीतर तो संदेह बना ही रहता है।

पूजा कर लेते हो मंदिर में जाकर। हाथ जोड़ कर मूर्ति के सामने खड़े हो जाते हो। जरा गौर करना, भीतर तुम संदेह के कीड़े को सरकता हुआ पाओगे। लेकिन झुक जाते हो डर के कारण। पता नहीं, हो ही! पीछे पछताना पड़े।

मुल्ला नसरुद्दीन का एक मित्र मर रहा था। मित्र एक मौलवी था, पंडित था बड़ा। लेकिन मरते वक्त उसे भी कठिनाई होने लगी। क्योंकि पांडित्य मृत्यु में तो साथ नहीं देता। वह डरा। अब तक तो कहता रहा, कि ईश्वर है, यह है, वह है—सब सिद्धांत। लेकिन अब उसे समझ में न आया कि क्या करे! मौत करीब आ गई। क्षण भर की देरी है, क्या होगा? क्या न होगा?

किसी ने कहा, तुम मुल्ला नसरुद्दीन को क्यों नहीं बुला लेते? वह बड़ा ज्ञानी है। मरता क्या न करता। डूबते तिनके का सहारा ले लेते हैं। उसने कहा, हां। चलो बुला लो। नसरुद्दीन को संदेह तो था। भरोसा तो था नहीं। लेकिन कोई हर्जा नहीं। नसरुद्दीन आया और उसने कहा, 'ठीक। तुम प्रार्थना करो, कि हे परमात्मा! हे शैतान! मुझे सम्हाल।' उसने कहा, 'यह किस प्रकार की प्रार्थना है? हे परमात्मा समझ में आता है, लेकिन। नसरुद्दीन ने कहा, कि मरते वक्त खतरा लेना उचित नहीं। पता नहीं। परमात्मा हो या न हो। इस घड़ी में किसी को नाराज करना ठीक नहीं।

भय के कारण पूजा चलती है, श्रद्धा के कारण

वह जो मूलाधार चक्र है, जहां से ऊर्जा कामऊर्जा बनती है, उसे बांध लेना है। उसे सिकोड़ लेना है। इसलिए योग ने, पतंजलि ने, हठयोग ने बहुत सी प्रक्रियाएं खोजी हैं मूल को बांधने की। मूल जब बंध जाए तो ऊर्जा अपने आप ऊपर उठने लगती है

नहीं। परमात्मा पर भरोसा तो तभी आता है जब ऊर्जा तीसरे नेत्र में प्रवेश करती है। तुम देखने में समर्थ हो जाते हो। तब तक परमात्मा एक झूठ है और माया सत्य है। फिर सारी चीज बदल जाती है। परमात्मा सत्य हो जाता है और संसार झूठा हो जाता है।

दर्शन की क्षमता, विचार की क्षमता का नाम नहीं है। दर्शन की क्षमता देखने की क्षमता है। वह साक्षात्कार है, जब बुद्ध कुछ कहते हैं, तो देख कर कहते हैं। वह उनका अपना अनुभव है। अनानुभूत शब्दों का क्या अर्थ है? केवल अनुभूत शब्दों में सार्थकता होती है।

मैंने सुना है, एक छोटे से गांव में मैं ठहरा हुआ था। और शहर से एक डाक्टर आया था गांव के ग्रामीणों को समझाने के लिए परिवार-नियोजन के संबंध में। तो जिस घर में मैं ठहरा था, उस घर के सामने के ही आंगन में ग्रामीण इकट्ठे हुए थे और डाक्टर समझा रहा था। तो मैं भी बैठा सुन रहा था। परिवार नियोजन के संबंध में सब बातें उसने समझाईं। एक ग्रामीण ने खड़े होकर पूछा, कि आप विवाहित हैं? उस डाक्टर ने कहा कि नहीं। मैं अविवाहित हूं। वह ग्रामीण हंसने लगा और, और भी हंसने लगे दूसरे ग्रामीण। तो उस डाक्टर ने पूछा, मामला क्या है? तो उस ग्रामीण ने कहा, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

लेकिन जीवन में जिन चीजों का तुम्हें स्वाद नहीं मिला है, उनको भी तुमने मान रखा है। और मानते मानते तुम्हें लगता है, कि तुम्हें स्वाद भी मिल गया है। गुड़ कभी चखा नहीं, गुड़ शब्द सुना है। परमात्मा कभी चखा नहीं, परमात्मा शब्द सुना है। जल कभी पीया नहीं, जल शब्द सुना है।

मिल गया है। गुड़ कभी चखा नहीं, गुड़ शब्द सुना है। परमात्मा कभी चखा नहीं, परमात्मा शब्द सुना है। जल कभी पीया नहीं, जल शब्द सुना है। परमात्मा कभी पीया नहीं, परमात्मा शब्द सुना है।

ऊर्जा जब तीसरी आंख पर प्रवेश करती है, तो अनुभव शुरू होता है। और ऐसे व्यक्ति के वचनों में तर्क का बल नहीं होता, सत्य का बल होता है। ऐसे व्यक्ति के वचनों में एक प्रामाणिकता होती है, जो वचनों के भीतर से आती है। किन्हीं बाह्य प्रमाणों के आधार पर नहीं। ऐसे व्यक्ति के वचन को ही हम शास्त्र कहते हैं। ऐसे व्यक्ति के वचन वेद बन जाते हैं। जिसने जाना है, जिसने जीया है, जिसने परमात्मा को चखा है, जिसने पीया है, जिसने परमात्मा को पचाया है, जो परमात्मा के साथ एक हो गया है।

फिर ऊर्जा और ऊपर जाती है। सहस्रार को छूती है।

'मूल बांधि सर गगन समाना'

सिर यानी सहस्रार। पहला सबसे नीचा केंद्र, चक्र है, मूल बंध : मूलाधार। और सबसे अंतिम चक्र है, सहस्रार। उसे हम सहस्रार कहते हैं आखिरी चक्र को, क्योंकि वह ऐसा है, जैसे सहस्र पंखुड़ियोंवाला कमल बड़ा सुंदर है। और जब खिलता है तो भीतर ऐसी ही प्रतीति होती है जैसे पूरा व्यक्तित्व सहस्र पंखुड़ियोंवाला कमल हो गया है। पूरा व्यक्तित्व खिल गया। जब ऊर्जा टकराती है सहस्र से तो उसकी पंखुड़ियां खिलनी शुरू हो जाती हैं। सहस्रार के खिलते ही व्यक्तित्व से आनंद का झरना बहने लगता है। मीरा उसी क्षण नाचने लगती है। 'पग घुंघरू बांध मीरा नाची।' उसी क्षण चैतन्य महाप्रभु पागलों की तरह उन्मुक्त होकर नाचने लगते हैं।

'मूल बांधि सर गगन समाना, सुखमनि यों तन लागी।'

बड़ी अनूठी बात है यह—'सुखमनि यों तन लागी।' ऐसा सुख पैदा होता है कि आत्मा तो नाचती ही है, आत्मा तो नाचेगी ही, लेकिन नाच इतना गहन हो जाता है, कि शरीर तक उस नाच में नाचने लगता है। शरीर तक आनंदित हो जाता है, जो कि जड़ है।

कबीर यह कह रहे हैं, कि उस क्षण में चेतना तो नाचती ही है, उसमें कुछ कहना नहीं है, लेकिन जड़ शरीर तक चेतना के साथ चैतन्य जैसा हो कर नाचने लगता है। चेतना तो प्रसन्न होती ही है, रोआं-रोआं शरीर का आनंदित हो उठता है। आनंद की लहर ऐसी बहती है, कि मुर्दा भी—शरीर तो मुर्दा है—वह भी नाचने लगता है।

तुम अभी शरीर के साथ बंधे-बंधे खुद मुर्दा हो गए हो। तब तब धारा उल्टी बहती है। तुम्हारी चैतन्य की क्षमता के साथ मुर्दा शरीर भी नाचने लगता है। जो तुमने सुना है, कि उसकी कृपा से अंधे देखने लगते हैं, लंगड़े चलने लगते हैं, गूंगे बोलने लगते हैं, उसका तुम मतलब न समझे होओगे। उसका यही मतलब है।

उस घड़ी जो आदमी सदा का गूंगा रहा हो, वह भी बोल उठेगा। इतनी बड़ी घटना घटती है, ऐसा उत्सव घटता है कि जो आदमी सदा का बहरा रहा हो, वह भी सुनने लगेगा। सारा तन जाग उठता है। सारी नींद टूट जाती है। आत्मा की ही नहीं, जड़ शरीर तक में कंपन सुनाई पड़ता है। संगीत वहां तक गूंजायमान होता है। प्रतिध्वनि वहां भी सुनाई पड़ने लगती है।

—ओशो

कहै कबीर दीवाना

प्रवचन नं. 5 से संकलित

(पूरा प्रवचन टेप पर उपलब्ध है)

दर्शन एक अनूठी प्रक्रिया है, जिसका संबंध विचार से नहीं, ऊर्जा से है। कपिल, कणाद, बुद्ध, महावीर, शंकर, नागार्जुन दार्शनिक हैं, विचारक नहीं हैं। क्योंकि दार्शनिक होने का अर्थ है, जिसकी ऊर्जा की लहरें तृतीय नेत्र के तट से टकराने लगीं। अब इसको दिखाई पड़ता है